हमारा समय तेजी से बदल रहा है कि बदलाव की नस को पकड़ना आसान नहीं। फिर भी अगर आंख-कान खुले हों और घनघोर वर्तमान के आर पार देख पाने का हुनर हो तो अंदाजा तो लगाया ही जा सकता है कि हमारे समाज की चाल क्या है। परिवर्तन की जो पदचाप सुनाई पड़ती है, वह भविष्य की किस डगर पर ले जाएगी, यह कहना तो मुश्किल है। इस संबंध में अब तक आप प्रो. मदनदत्त, विवेक मोहन, अमर ठाकुर, डॉ. दिनेश शर्मा, डॉ. कैलाश आहलूवालिया और मोहिंदर कुमार के विचार पढ़ चुके हैं। इस बार परिवर्तन की पदचाप सुना रहे हैं मुंबई से ***आर.बी.राणा*** *। लंबे संघर्ष भरे जीवन के से निकल कर वर्तमान में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र में कार्यरत राणा हिमाचली समाज में भी सक्रिय हैं।*

- नवम्बर 2009 में देस (हिमाचल) में दो शादियों में जाना हुआ। तीन दिन की लम्बी शादी व सामाजिक कुरीतियां देखकर लगा कि मुम्बई की भाग दौड़ की दो तीन घंटे की शादी इससे कहीं बेहतर है। नाई व पुरोहितों के कर्मकांड देखकर लगा कि लाखों लोग जो राधा स्वामी व निरंकारी बन रहे हैं वह सब समझदार हैं। दोनों तरफ के नाई व पुरोहित मिलकर लोगों को ऐसे बेवकूफ बना रहे हैं जैसे बकरे की खाल नोच रहे हों। पहले कपड़ेवाला कपड़े उतारता है। एक कपड़ा मेरे पास बंगाणा, हमीरपुर, लुधियाणा फिर मुम्बई, हमीरपुर होते हुए तीसरी बार मुंबई आया जो मेरे किसी काम का नहीं। किसी भी फर्नीचर की दुकान में जाओ वह पूछता है कि दहेज के लिए चाहिए? मतलब कि दहेज के लिए दो नम्बर का माल रखा हुआ है। लड़की के ससुराल में रखने की जगह हो या न हो हम देंगे जरूर।

- शराब की इतनी छवील लगती है कि अलग अलग आयु समूह बने हुए हैं। जिनमें भाई भाई, बाप बेटा, मामा भांजा व ससुर दामाद में कोई भेद नहीं। मजे से बीड़ी व शराब चल रही है। नई पीढ़ी तो पूरी तरह नशे की गिरिफ्त में है। कुछ कमी है तो पंजाब से सीख कर आ रहे हैं। शादी में गांव वाले व रिश्तेदार सिर्फ मजा करने आते हैं। खाना पीना व ताश खेल कर टाईम पास करना, यहां तक तो ठीक, पर व्यावसायिक लोग भी जैसे पुरोहित, नाई उर्फ राजा, फोटोग्राफर, रसोईया, साफ सफाई वाला यहां तक कि टैक्सीवाला भी शराब पीकर झूमे तो समझ नहीं आता कि हम कहां जा रहे हैं। किसी को कुछ बोल नहीं सकते हैं। मैं तीन दिन बेचारा बन कर रह गया। ऐसा लगा कि टैक्सी व बस वाले पर किसी का नियंत्रण नहीं। जैसे सारा हिमाचल राम भरोसे चल रहा है। किसी टैक्सीवाले ने LPG लगाया है कोई मिट्टी का तेल डाल चला है, किसी का टूरिस्ट परमिट नहीं। मुंह मांगा रेट व मुंहफट भाषा, क्या क्या तारीफ करूं। इस सब के लिए हम जिम्मेदार नहीं?

- मैंने तीन बच्चों की शादी की। एक पाई का शराब नहीं। एक पाई का दहेज नहीं। कोई कपड़ा नहीं। सिर्फ बन्द कवर। बन्द करने वाला व खोलने वाला ही जाने क्या है। नए दस के नोटों का हार बना कर इतनी बेईज्जती हिमाचल में की जाती है कि एक रिकार्ड है। जुर्म तो है ही।

- यह सब तो खुशी के मौके पर है पर हिमाचल में मरना इससे भी मंहगा है। मैंने अपनी वसीयत में लिखा है कि मेरे मरने के बाद मेरी अस्थियां खड्ड से उठाना नहीं। बरसात आने पर अपने आप हरिद्वार पहुंच जाएंगी व सब कर्मकांडों की बजाए किसी एक स्कूल को (इक्यावन हजार रुपए) दान करना, मेरी आत्मा राजी होगी, मौज करेगी।

- कुछ साकारात्मक पक्ष भी हैं। मैं उन्हें भी उजागर करना चाहता हूं। लोग आज रोटी, कपड़ा व मकान पर पहले से ज्यादा खर्च कर रहे हैं। शिक्षा का स्तर ऊंचा उठ रहा है खासकर लड़कियां ज्यादा पढ़ लिख रही हैं। मैंने कई जोड़ों में ऐसा देखा है कि लड़के 10-12 तक पढ़े हैं व लड़कियां स्नातक हैं। बालिका पढ़ेगी तो अगली पीढ़ी व समाज, देश आगे बढ़ेगा। सोना रु. 200 तोला लोग मुश्किल से खरीदते थे अब रु. 15-16000 तोला धड़ल्ले से खरीद रहे हैं। घूंघट प्रथा बिल्कुल ही खत्म हो गई है। दुल्हा जहां पहले पालकी में जाता था अब अपनी या भाड़े की कार में जा रहा है। जहां खच्चर नहीं जाती थी वहां जगह जगह कार जा रही है।

- हर गांव में दो चार लड़के 30-30 वर्ष तक कुंवारे हैं। उनके खासकाम देखकर लड़कियां हिम्मत से शादी के लिए न बोल देती हैं। भ्रूणहत्या भी इसके लिए जिम्मेदार है।

- हिमाचल में मंदिरों की बाढ़ आई हुई है। शायद लोग देव पर आस्था खोते जा रहे हैं। हालांकि कुछ संत महात्माओं की शरण में जाकर शराब व मांसाहार छोड़ रहे हैं।

- समाज से मेरा अनुरोध है कि राम अच्छाई है व रावण बुराई है। आज तक लाखों करोड़ों लोगों ने दुनिया में राम पर अपने बच्चों के नाम रखे हैं पर रावण? मुझे तो आज तक एक भी बच्चा नहीं मिला। मतलब सभी अच्छाई चाहते हैं। बुराई कोई नहीं चाहता है। भले खुद बुरा काम ही क्यों न करे।

- हर कोई चाहता है कि देश में भगतसिंह पैदा हों पर मेरे घर में नहीं। मेरा बच्चा फांसी पर क्यों चढ़े। ऐसा चलेगा नहीं। समाज सुधार के लिए सब को मिलकर कोशिश करनी होगी, नहीं तो देवभूमि सिर्फ कथनी में ही रह जाएगी।